वैदिक मन्त्रों में पाए जाते हैं। **ओमित्येतद् ब्रह्मणो नेदिष्टं नाम**। इस श्लोक से स्पष्ट है कि 'ओम्' परब्रह्म का पहला नाम है। फिर **तत्त्वमसि** श्रुति से दूसरा नाम 'तत्' इंगित है और **सदेव सौम्य** तीसरे 'सत्' नाम का द्योतक है। **ॐ तत् सत्** में इन तीनों का समावेश है। प्राचीन काल में, आदिजीव ब्रह्माजी ने यज्ञ करते समय श्रीभगवान् के इन तीनों नामों का उच्चारण किया था। शिष्यपरम्परा के माध्यम से यह सिद्धान्त आजतक चला आ रहा है। अतएव यह मन्त्र अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। भगवद्गीता के अनुसार, जो कुछ भी कर्म किया जाय, उसे 'ॐ तत् सत्', अर्थात् श्रीभगवान् के लिए करना चाहिए। जो पुरुष इन शब्दों से युक्त होकर तप, दान, यज्ञ, आदि करता है, वह कृष्णभावनाभावित कर्म ही करता है। कृष्णभावना दिव्य कर्मों के सम्पादन की वह वैज्ञानिक विधि है, जिससे अपने घर— भगवद्धाम की फिर प्राप्ति हो जाती है। इस दिव्य विधि से कार्य करते हुए शक्ति का कभी ह्रास नहीं होता।

तस्मादोमित्युदाहृत्य यज्ञदानतपःक्रियाः।
प्रवर्तन्ते विधानोक्ताः सततं ब्रह्मवादिनाम्।।२४।।

तस्मात्=इसलिए; **ओम्**=ओम्; **इति**=इस प्रकार; **उदाहृत्य**=उच्चारण करके; **यज्ञदानतपःक्रियाः**=यज्ञ, दान, तप आदि क्रियाएँ; **प्रवर्तन्ते**=आरम्भ होती हैं; **विधान-उक्ताः**=शास्त्रविहित; **सततम्**=सदा; **ब्रह्मवादिनाम्**=योगियों की।

अनुवाद

इसलिए योगीजन परब्रह्म की प्राप्ति के लिए ओंकार का उच्चारण करके ही तप, यज्ञ, दान आदि सब क्रियाओं का आरम्भ करते हैं।।२४।।

तात्पर्य

ॐतद्विष्णोः परमं पदम्। श्रीविष्णु के चरणकमल भक्ति के परम आश्रय हैं। सब कुछ केवल श्रीभगवान् के लिए करने से सम्पूर्ण क्रियाओं की सफलता निश्चित हो जाती है।

तदित्यनभिसंधाय फलं यज्ञतपःक्रियाः।
दानक्रियाश्च विविधाः क्रियन्ते मोक्षकांक्षिभिः।।२५।।

तत्=वह; **इति**=इस प्रकार (उच्चारण कर); **अनभिसंधाय फलम्**=फल की इच्छा के बिना; **यज्ञतपःक्रियाः**=यज्ञ, तप आदि क्रियाएँ; **दानक्रियाः**=दान क्रियाएँ भी; **च**=तथा; **विविधाः**=नाना; **क्रियन्ते**=की जाती हैं; **मोक्षकांक्षिभिः**=मुमुक्षु पुरुषों द्वारा।

अनुवाद

'तत्', इस प्रकार उच्चारण करके यज्ञ, तप और दान क्रियाओं को करना चाहिए। इन दिव्य क्रियाओं का उद्देश्य भवबन्धन से मुक्त होना है।।२५।।

तात्पर्य

शुद्ध सत्त्वमयी दिव्य अवस्था की प्राप्ति के लिए यह आवश्यक है कि किसी